स्क्रीनिंग क्या है?

कोलोरेक्टल कैंसर का विकास लगभग हमेशा आंत में सौम्य घावों (पॉलीप्स या एडेनोमा) के प्रकट होने से पहले होता है। कोलोरेक्टल कैंसर की रोकथाम और शीघ्र निदान के लिए स्क्रीनिंग करने का मकसद इन कैंसर-पूर्व घावों की पहचान करना होता है, ताकि सही समय पर प्रभावी इलाज प्रदान किया जा सके।
स्क्रीनिंग के लिए आयु सीमा को 69 वर्ष की आयु से आगे बढ़ाया गया है, ताकि 50 और 74 वर्ष की आयु के सभी व्यक्तियों को धीरे-धीरे इसमें शामिल किया जा सके।

HINDI

RegioneEmilia-Romagna

SERVIZIO SANITARIO REGIONALE
EMILIA-ROMAGNA

क्या आपको और जानकारी चाहिए?

हमारी साइट पर जाएँ

regioneer.it/colon

या हमारे इस टोल-फ्री नंबर

800 033 033

पर कार्यदिवस में 8.30am से 6pm तक और शनिवार को 8.30am से 1pm तक कॉल करें।

RegioneEmilia-Romagna

SERVIZIO SANITARIO REGIONALE
EMILIA-ROMAGNA

यह आसान, मुफ़्त है और यह आपका जीवन बचा

स्क्रीनिंग से आपकी जान बच सकती है!

स्क्रीनिंग आसान, मुफ़्त और प्रभावी है, क्योंकि अगर बीमारी का पता शुरुआती चरण में लग जाता है, तो पूरी तरह से रिकवर होने की अधिक संभावना होती है। कोलोरेक्टल कैंसर है:

दूसरा सबसे ज़्यादा डायग्नोस किया गया

इटली के लोगों में दूसरा सबसे घातक रोग

वे लोग जो कोलोरेक्टल कैंसर स्क्रीनिंग में नियमित रूप से शामिल होते हैं, उनमें मृत्यु और डायग्नोसिस दरें कम हो जाती हैं।

मृत्यु दर

- पुरुषों में 65%

- महिलाओं में 54%

कैंसर डायग्नोसिस

- पुरुषों में 33%

- महिलाओं में 21%

यह कैसे काम करती है

स्क्रीनिंग में उस सैंपल का इस्तेमाल करके स्टूल में ऑकल्ट ब्लड की जाँच करना शामिल होता है जिसे आप घर पर खुद कलेक्ट कर सकते हैं।

1. पत्र में बताए गए स्थान से **किट कलेक्ट करें**
2. **निर्देश पढ़ें**

3. दी गई स्टिक का इस्तेमाल करके **स्टूल सैंपल कलेक्ट करें**

4. पत्र में बताए गए कलेक्शन सेंटर पर **सैंपल सौंपें**
5. **नतीजे** को आपके घर या आपके EHR के पास भेज दिया जाएगा

हर दो साल में आपको एक आमंत्रण मिलेगा

स्क्रीनिंग को दोहराने के लिए

स्वस्थ महसूस करने पर भी टेस्ट को दोहराना ज़रूरी है, क्योंकि पॉलिप्स और ट्यूमर की वजह से अक्सर कई वर्षों तक कोई लक्षण नहीं दिखता।

अगर टेस्ट पॉज़िटिव आता है, तो क्या होगा?
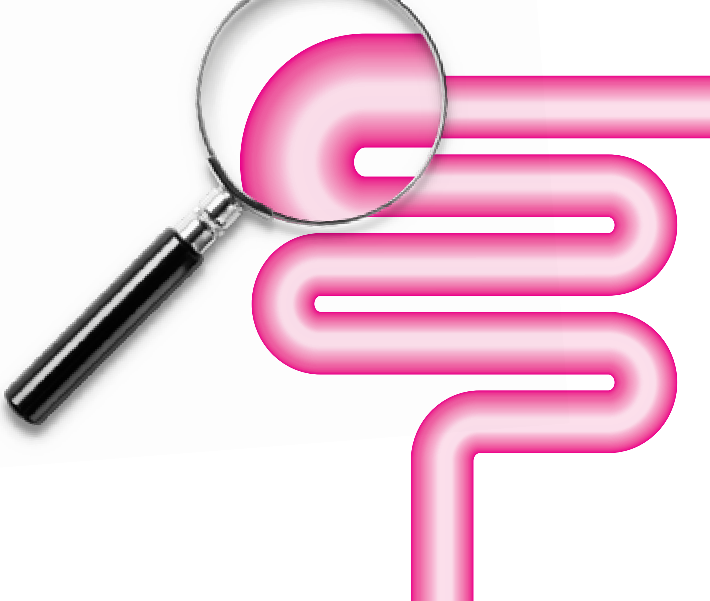
स्टूल (मल) में ऑकल्ट ब्लड की मौजूदगी का यह अर्थ नहीं है कि वहाँ पॉलिप या ट्यूमर है।
रक्तस्राव कई दूसरी वजहों से हो सकता है जैसे फ़िशर (गुदा में कट), बवासीर या डायवर्टिक्युलाइटिस (विपुटीशोथ)।
यही वजह है कि अगर टेस्ट पॉज़िटिव आता है, तो अनुशंसित कोलोनोस्कोपी जाँच करवाना ज़रूरी हो जाता है।